अक्तूबर २०१३

क़ीमत ₹ १२/-

दादा भगवान परिवार का

अक्रम एक्सप्रेस

मीठी वाणी

अक्रम एक्सप्रेस

संपादक:
डिम्पल महेता
वर्ष : १ अंक: ७
अखंड क्रमांक: ७
अक्तूबर २०१३

संपर्क सूत्र
बालविज्ञान विभाग
त्रिमंदर संकुल, सीमंधर सिटी,
अहमदाबाद - कलोल हाइवे,
मु.पो. - अडालज,
जिला. गांधीनगर - ३८२४२१, गुजरात
फोन : (०७९) ३९८३०१००

Printed & Published by

Dimple Mehta on behalf of
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj-382421.
Dist-Gandhinagar.

Owned by
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj-382421.
Dist-Gandhinagar.

Printed at
Amba Offset
Basement, Parshvanath
Chambers, Nr.RBI,
Usmanpura, Ahmedabad-14.

Published at
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj-382421.
Dist-Gandhinagar.

वार्षिक सदस्यता(हिन्दी)
भारत :१२५ रुपये
यु.एस.ए. :१५ डॉलर
यु.के. :१० पाउन्ड
पाँच वर्ष
भारत : ५०० रुपये
यु.एस.ए. : ६० डॉलर
यु.के. : ४० पाउन्ड
D.D/ M.O'महाविदेह फाउन्डेशन' के नाम पर भेजें।

मीठी वाणी

संपादकीय

बालमित्रो,

अपने यहाँ एक कहावत है कि "तलवार का घाव भर जाता है, लेकिन वाणी का घाव नहीं भरता" महाभारत का युद्ध इस कहावत को साबित करता है। दुर्योधन के लिए द्रोपदी जी के मुँह से निकले हुए शब्द "अंधे का पुत्र अँधा" ने तो महाभारत का युद्ध कराके विनाश का कारण बना। ऐसी होती है, वाणी की असर। इसीलिए कहा है न कि,

काणाने काणो कहे, कडवुं लागे वेण,
धीमे रहीने पूछीए, शाथी खोयुं नेण

मीठी वाणी किसी के लिए भी दु:खदाई नहीं होती, तो फिर हम मीठी वाणी बोलने में क्यों कंजूसी करें? लेकिन मीठी वाणी निकलती ही नहीं हो तो क्या करें? परम पूज्य दादाश्री ने इस पर बहुत ही सुंदर समझ इस अंक में दी है। इसके साथ ही बोले हुए शब्दों की वैज्ञानिक असर और वाणी मीठी कैसे हो सकती है, उसकी समझ भी इसमें दी गई है।

तो आओ, इस समझ को समझकर कड़वी वाणी के बदले मीठी वाणी बोल पाएँ, ऐसा पुरुषार्थ करें।

- डिम्पल महेता

अनुक्रमणिका

०३ दादाजी कहते हैं...
०४ यह तो नई ही बात!
०६ कड़वी वाणी का असर
१० मीठी वाणी का पावर
१३ अपने आप को परखकर देखो
१४ चलो खेलें...
१५ ऐतिहासिक गौरवगाथा
१८ मीठी यादें
१९ पज़ल के जवाब
२० जन्माष्टमी की झलक

दादाजी कहते हैं...

शब्द तो ठंडक भी देते हैं और जलाते भी हैं। यानी कि इफेक्टिव होते हैं। शब्द मीठे होने चाहिए। अरे, कोई हमें डाँटे, उसके साथ भी यदि हम मीठा बोलें तो एकता टिकेगी।

प्रश्नकर्ता : हाँ, मतलब बोलने का असर तो होता ही है न?

दादाश्री : बोलने का तो बहुत ही ज्यादा असर होता है। इस टेपरिकॉर्ड में तो सिर्फ शब्द ही टेप होते हैं। लेकिन इस मनुष्य के बॉडी-मन ऐसे हैं कि इसमें सबकुछ टेप हो जाता है। भीतर अपार शक्ति है। जैसा वह बोलता है न, वैसा असर हो जाता है। एक आदमी से आप कहो कि "आप झूठे हो" तो "झूठा" कहने के साथ ही भीतर इतना कुछ हो जाता है कि दो घंटे तक उसके प्रति प्रेम ही उत्पन्न नहीं होता। यह शब्द सुनकर उसे तो दुःख होता ही है लेकिन वह आपको भी दुःख देता है। और यदि आप कहो कि "आप बहुत अच्छे हो" तो वह आपको भी अंदर शांति देगा। आपका बोला हुआ उनको तो शांति देगा ही लेकिन आपको भी शांति देगा।

यदि कोई सो रहा हो और उसके लिए आप कहो कि, "ये नालायक हैं" तो वह भी टेप हो जाता है। इसलिए सोते हुए के लिए भी कुछ मत कहना। यदि बोलना हो तो अच्छा ही बोलना चाहिए कि "आप बहुत अच्छे हो।" अँधेरे में बोले या अकेले में बोले हो, फिर भी टेप हो जाएगा और उसका फल कड़वा ज़हर जैसा आएगा।

प्रश्नकर्ता : आप जैसी मीठी वाणी कब होगी?

दादाश्री : जब यह नेगेटिव शब्द बोलना बंद होगा तब। किसी को दुःख हो ऐसी वाणी निकल जाए तो उसका प्रतिक्रमण करना कि "हे शुद्धात्मा भगवान, मैं ऊँची आवाज़ में बोल गया। मुझसे यह भूल हो गई। इसलिए मैं माफी माँगता हूँ और ऐसी भूल फिर से नहीं करूँगा, ऐसा निश्चय करता हूँ। ऐसी भूल नहीं करने की मुझे शक्ति दीजिए।" आप किसी को टोकोगे तो सामनेवाले को बुरा तो लगेगा, लेकिन यदि प्रतिक्रमण करते रहोगे तो छः महीने, बारह महीने में ऐसी वाणी निकलेगी कि सामनेवाले को मीठी लगेगी।

हमें रोज़ निश्चय करना है कि "हे दादा भगवान! मुझे, किसी भी देहधारी जीवात्मा के साथ कभी भी कठोर भाषा, तंतीली भाषा न बोली जाए, न बुलवाई जाए या बोलने के प्रति अनुमोदना न की जाए, ऐसी परम शक्ति दीजिए।

कोई कठोर भाषा, तंतीली भाषा बोले तो मुझे, मृदु-ऋजु भाषा बोलने की शक्ति दीजिए।" फिर तो बहुत ही अच्छा हो जाएगा।

यह तो नई ही बात!

कोई इतना मीठा बोले
कि "भाई, कृपया खाना
खाने पधारिए।" तो वह
भले ही सिर्फ खिचड़ी
खिलाए, फिर भी
कितनी अच्छी लगेगी!

वाणी मीठी

A.
जब क्लेश भाव
कम होते जाएँगे तब।

वाणी सुधारनी हो, तो लोगों को खराब लगे, ऐसी वाणी बोलना बंद कर दें। फिर किसी की भूल न निकालें। टकराव न करें, तो भी वाणी सुधर जाती है।

किसी भी जीव को
किंचित्मात्र भी दु:ख न हो
ऐसी वाणी बोलने की भावना
हो तो वैसी ही टेप तैयार हो
जाएगी। फिर धीरे धीरे मीठी
वाणी निकलती जाएगी।

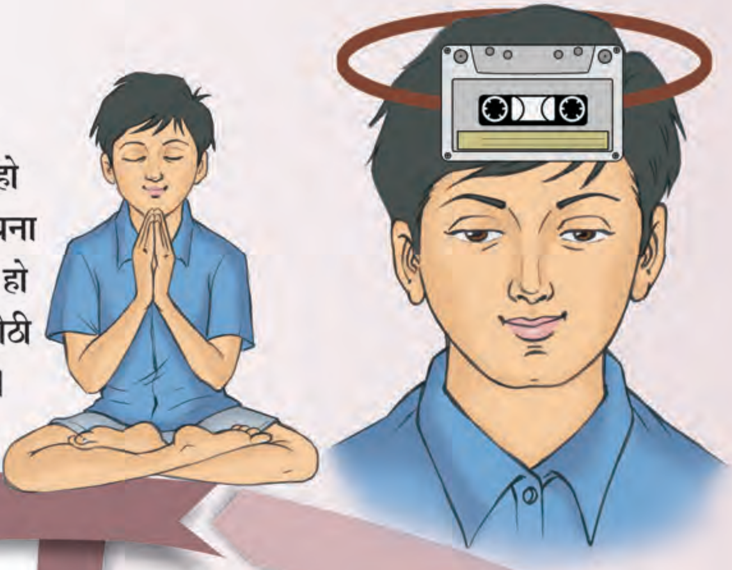

कब होगी?

B.

जब भेदभाव कम होता
जाएगा, तब प्रेम बढ़ेगा।
और प्रेम बढ़ता जाएगा,
वैसे वैसे वाणी मीठी
होती जाएगी।

किसी को कोई शब्द कहने से
अगर उसे खराब लगे तो वह
शब्द अपशब्द कहलाएगा। वह यों
ही अपशब्द बोले न... तो भी
जोखिम है और यों ही अच्छे शब्द
बोले तो भी हितकारी हैं।

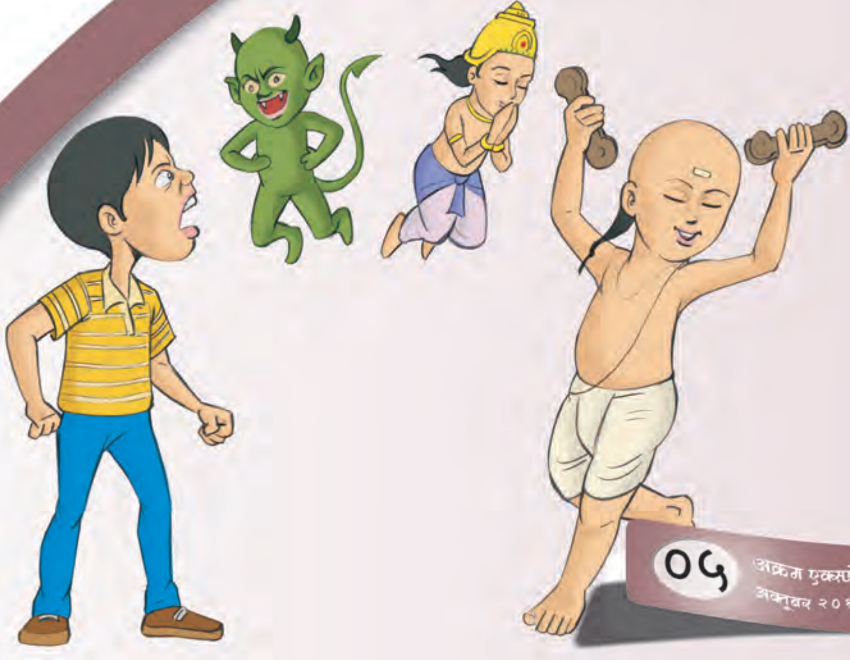

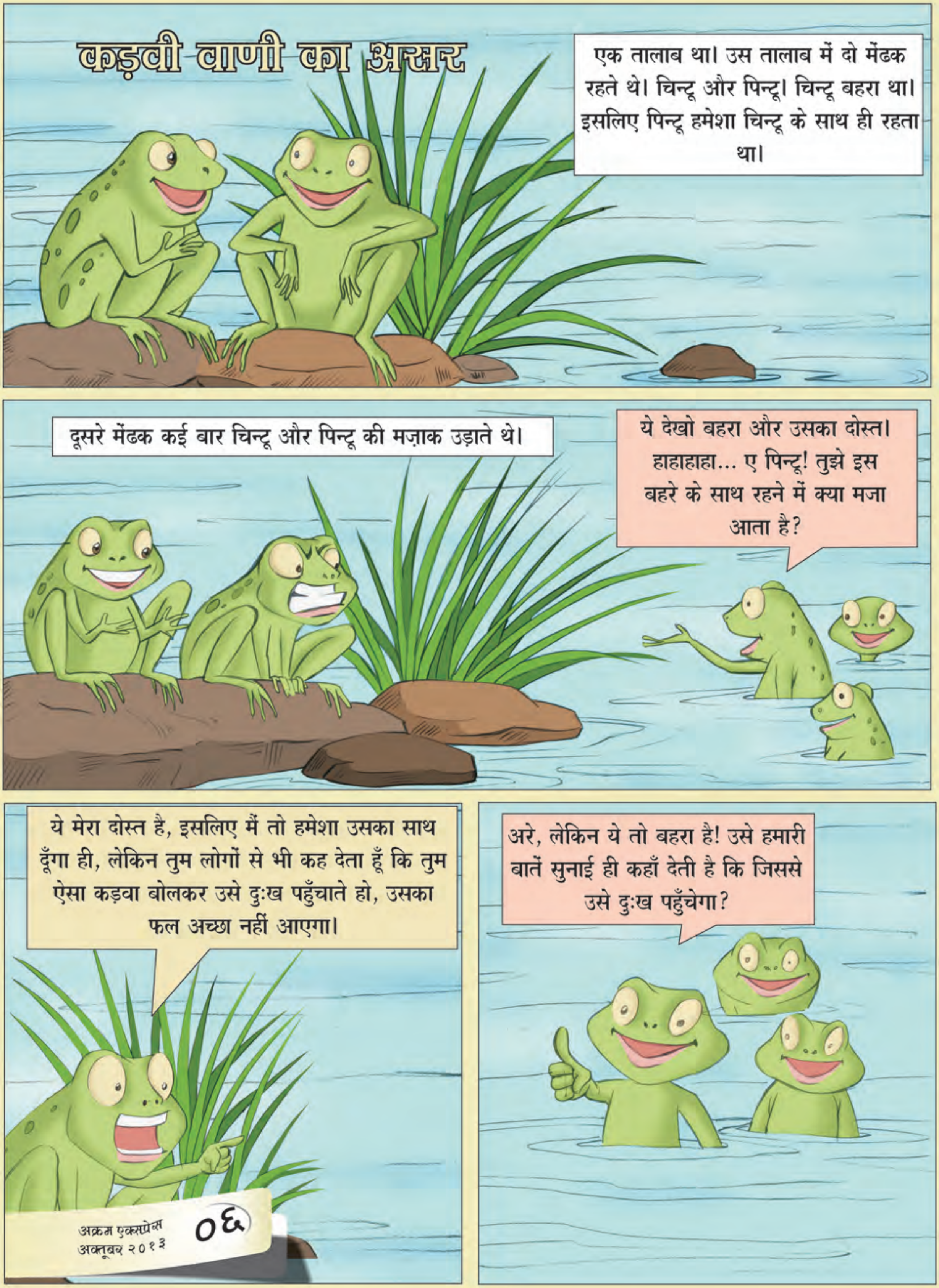
कड़वी वाणी का असर
एक तालाब था। उस तालाब में दो मेंढक रहते थे। चिन्टू और पिन्टू। चिन्टू बहरा था। इसलिए पिन्टू हमेशा चिन्टू के साथ ही रहता था।
दूसरे मेंढक कई बार चिन्टू और पिन्टू की मज़ाक उड़ाते थे।
ये देखो बहरा और उसका दोस्त। हाहाहाहा... ए पिन्टू! तुझे इस बहरे के साथ रहने में क्या मजा आता है?
ये मेरा दोस्त है, इसलिए मैं तो हमेशा उसका साथ दूँगा ही, लेकिन तुम लोगों से भी कह देता हूँ कि तुम ऐसा कड़वा बोलकर उसे दुःख पहुँचाते हो, उसका फल अच्छा नहीं आएगा।
अरे, लेकिन ये तो बहरा है! उसे हमारी बातें सुनाई ही कहाँ देती है कि जिससे उसे दुःख पहुँचेगा?

उसे सुनाई नहीं देता लेकिन तुम्हारे उल्टे भाव तो उसे पहुँचते ही हैं न।
क्या बकवास कर रहा है? इस बहरे के साथ रह-रहकर तेरा भी दिमाग खिसक गया है।
पिन्टू की आँखें भर गई।
मैं इन सब मेंढकों से अलग ही रहूँगा।
बरसात शुरू हो गई। मूसलाधार बारिश हुई।
बरसात में जमीन घिस गई है, इसलिए तालाब के तट के पास गहरा गड्ढा हो गया है। सभी को चेतावनी दी जाती है कि तालाब के इस तरफ से नहीं कूदना है। क्योंकि वहाँ जान को खतरा है।
चिन्टू और पिन्टू को इस गड्ढे के बारे में जानकारी ही नहीं थी। एक दिन खेलते-खेलते दोनों ने तट पर से गहरे गड्ढे में छलाँग लगाई।
आआआआआ आआ..!! इतना गहरा गड्ढा! मुझे तो मालूम ही नहीं था। अब क्या करेंगे?
आवाज सुनकर बाकी मेंढक बाहर तट पर आ गए और ज़ोर-ज़ोर से हँसने लगे।
हहाहाहा... यह दोनों तो बिल्कुल बेवकूफ हैं। अरे पिन्टू! तुझे समझाया था कि इस बहरे चिन्टू से दूर रहना। ले, गड्ढे में गिर गया न, उसके साथ!

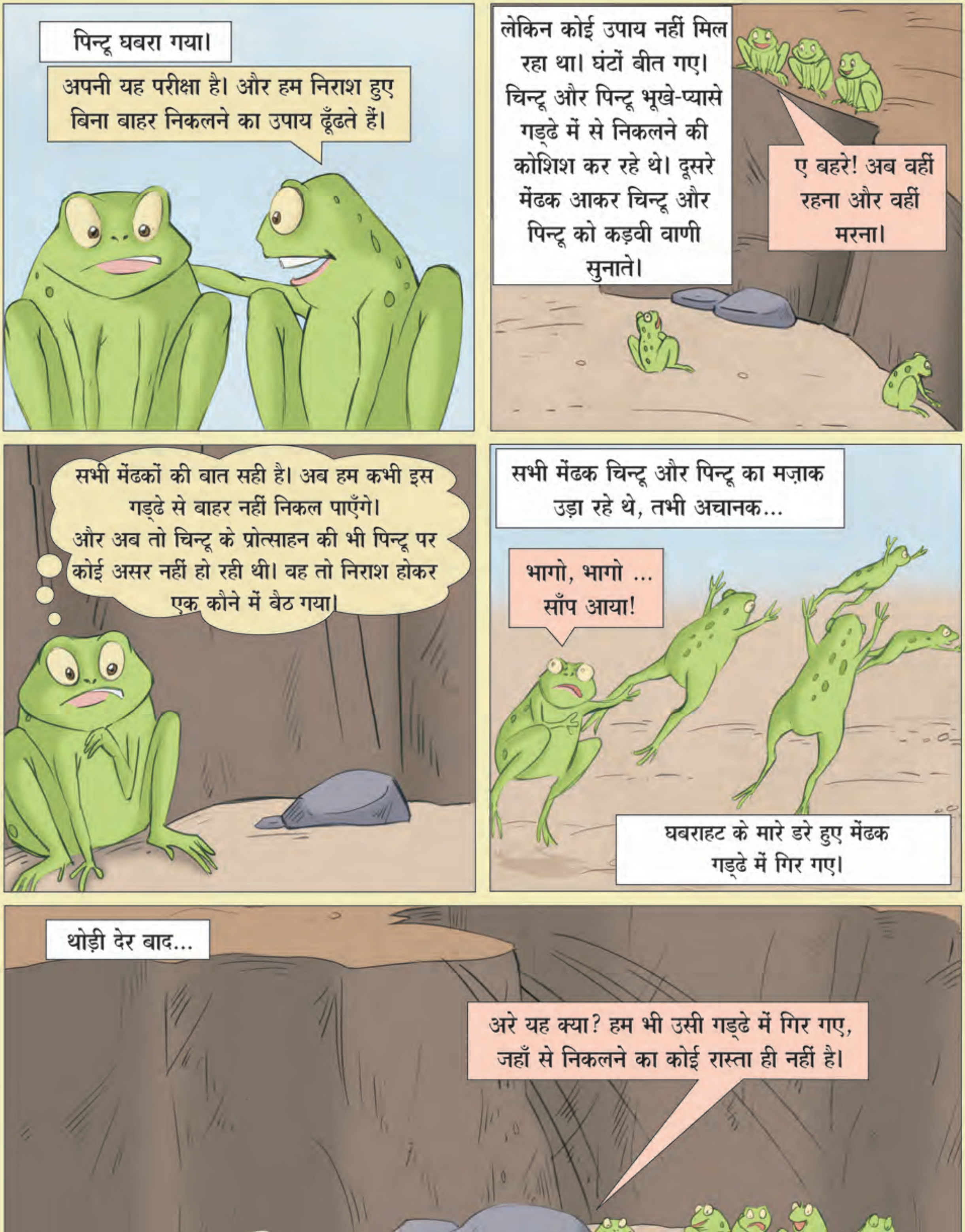
पिन्टू घबरा गया।
अपनी यह परीक्षा है। और हम निराश हुए बिना बाहर निकलने का उपाय ढूँढते हैं।
लेकिन कोई उपाय नहीं मिल रहा था। घंटों बीत गए। चिन्टू और पिन्टू भूखे-प्यासे गड्ढे में से निकलने की कोशिश कर रहे थे। दूसरे मेंढक आकर चिन्टू और पिन्टू को कड़वी वाणी सुनाते।
ए बहरे! अब वहीं रहना और वहीं मरना।
सभी मेंढकों की बात सही है। अब हम कभी इस गड्ढे से बाहर नहीं निकल पाएँगे।
और अब तो चिन्टू के प्रोत्साहन की भी पिन्टू पर कोई असर नहीं हो रही थी। वह तो निराश होकर एक कौने में बैठ गया।
सभी मेंढक चिन्टू और पिन्टू का मज़ाक उड़ा रहे थे, तभी अचानक...
भागो, भागो ... साँप आया!
घबराहट के मारे डरे हुए मेंढक गड्ढे में गिर गए।
थोड़ी देर बाद...
अरे यह क्या? हम भी उसी गड्ढे में गिर गए, जहाँ से निकलने का कोई रास्ता ही नहीं है।

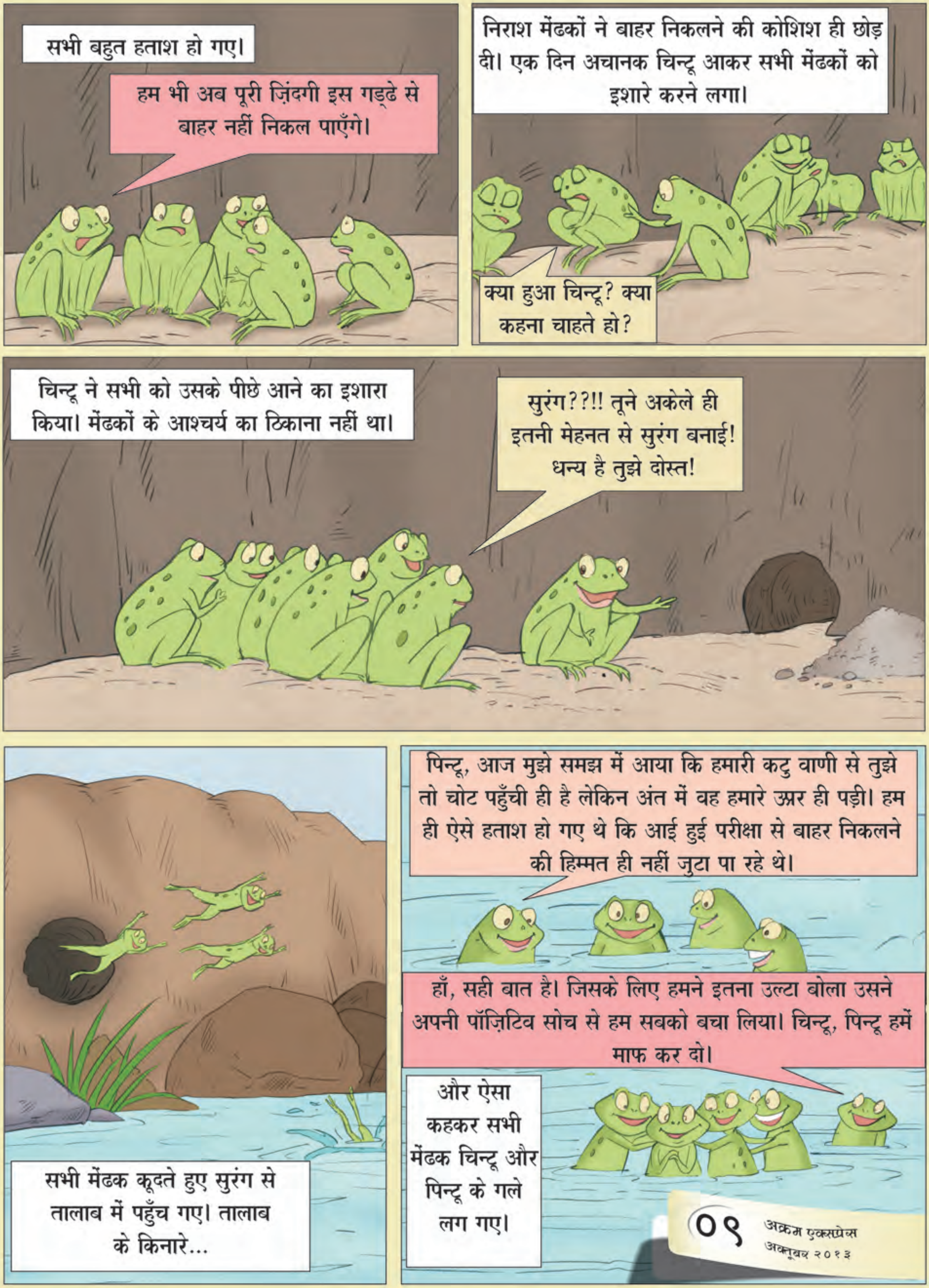

सभी बहुत हताश हो गए।
हम भी अब पूरी ज़िंदगी इस गड्ढे से बाहर नहीं निकल पाएँगे।
निराश मेंढकों ने बाहर निकलने की कोशिश ही छोड़ दी। एक दिन अचानक चिन्टू आकर सभी मेंढकों को इशारे करने लगा।
क्या हुआ चिन्टू? क्या कहना चाहते हो?
चिन्टू ने सभी को उसके पीछे आने का इशारा किया। मेंढकों के आश्चर्य का ठिकाना नहीं था।
सुरंग??!! तूने अकेले ही इतनी मेहनत से सुरंग बनाई! धन्य है तुझे दोस्त!
सभी मेंढक कूदते हुए सुरंग से तालाब में पहुँच गए। तालाब के किनारे...
पिन्टू, आज मुझे समझ में आया कि हमारी कटु वाणी से तुझे तो चोट पहुँची ही है लेकिन अंत में वह हमारे ऊपर ही पड़ी। हम ही ऐसे हताश हो गए थे कि आई हुई परीक्षा से बाहर निकलने की हिम्मत ही नहीं जुटा पा रहे थे।
हाँ, सही बात है। जिसके लिए हमने इतना उल्टा बोला उसने अपनी पॉज़िटिव सोच से हम सबको बचा लिया। चिन्टू, पिन्टू हमें माफ कर दो।
और ऐसा कहकर सभी मेंढक चिन्टू और पिन्टू के गले लग गए।

मीठी वाणी का पावर

मोडर्न हाइस्कूल की सातवीं क्लास में पढ़नेवाले विराट और वीरेन की जोड़ी प्रसिद्ध थी। वे खास मित्र थे। साथ में स्कूल जाते, साथ में खेलते और साथ में पढ़ाई भी करते थे। शिक्षक और दूसरे विद्यार्थी भी विराट और वीरेन को बहुत पसंद करते थे। सभी विराट और वीरेन को जितना पसंद करते, उतना ही अर्णव को नापसंद करते थे। अर्णव की दादागिरी से पूरा क्लास तंग आ गया था। अर्णव दूसरे बच्चों से ज्यादा लंबा और स्ट्रोंग था और स्ट्रोंग होने का वह कई बार गलत फायदा भी उठाता था।

एक दिन स्कूल में सातवीं क्लास के विद्यार्थी क्रिकेट खेल रहे थे। सभी ने नंबर से अपनी अपनी बारी के अनुसार बैटिंग करने का तय किया। विराट का पहला नंबर आया, वीरेन का चौथा और अर्णव का सातवाँ नंबर आया। अर्णव को यह बिल्कुल अच्छा नहीं लगा। वह गुस्से से लालपीला हो गया।

"विराट, मैं पहले बैटिंग करूँगा", उसने विराट से जोर से कहा।

"नहीं, मेरा पहला नंबर आया है। इसलिए पहले बैटिंग मैं ही करूँगा।" विराट ने पलटकर जवाब दिया।

"ए नंबर-वंबर मुझ पर लागू नहीं होता। मुझे बैट देता है या फिर..." अर्णव ने हाथ ऊपर करके विराट को धमकाया।

वीरेन ने अर्णव को शांत करते हुए कहा, "अर्णव, तुझे पहले बैटिंग करनी है न? तू कर ले। बाद में हम करेंगे। हम सब एक ही हैं। विराट, अर्णव को बैट दे दे।" उसने विराट के सामने देखते हुए कहा।

वीरेन ने अर्णव का पक्ष लिया, यह विराट को अच्छा नहीं लगा। उसका गुस्सा सातवें आसमान पर चढ़ गया। वह अर्णव को कुछ कहने ही जा रहा था कि वीरेन ने उसे रोक दिया। विराट ने हताश होकर अर्णव को बैट दे दिया और खेल शुरू हुआ।

शाम को घर लौटते समय भी विराट, वीरेन से नाराज था। उसने वीरेन से कटाक्ष करते हुए कहा, "तू तो बिल्कुल डरपोक है। अर्णव के सामने कैसा मीठा मीठा बोल रहा था कि हम सब एक ही हैं न। हं..." कहकर उसने झटके के साथ सिर हिलाया।

"नहीं, मैं उससे डरा नहीं था। मैं सिर्फ उसे शांत करके झगड़ा टालना चाहता था। जिससे हम सब शांति से खेल सकें। मीठी वाणी से किसी भी तरह का झगड़ा टाला जा सकता है। और हमारे लिए गए एडजस्टमेन्ट बेकार नहीं जाते। एक दिन उसमें ज़रूर परिवर्तन आएगा।" वीरेन ने विश्वास के साथ जवाब दिया।

"सपने देखना छोड़ दे। वह कभी नहीं सुधरेगा।" विराट ने कहा।

और ज्यादा बहस किए बिना दोनों अपने अपने घर चले गए।

थोड़े दिन बाद उसी मैदान में अर्णव फुटबॉल खेल रहा था। विराट और वीरेन उनके अन्य दोस्तों के साथ दूर से ही उस गेम की मजा ले रहे थे।

बरसात के दिन थे। इसलिए मैदान में थोड़े गड्ढे हो गए थे। अचानक खेलते-खेलते अर्णव एक गड्ढे में गिर पड़ा।

"ओह नो!" अर्णव ज़ोर से चिल्लाया।

यह देखकर वीरेन तुरंत ही अर्णव के पास दौड़कर गया, "अर्णव, तू ठीक है न? बहुत लगी है क्या?"

"हाँ, हाँ, आई एम फाइन। तुझे मेरी फिक्र करने की ज़रूरत नहीं है।" अर्णव ने अकड़कर जवाब दिया।

अर्णव ने अपने आप खड़े होने की कोशिश की, लेकिन वह खड़ा नहीं हो पाया।

"विराट, यहाँ पर आओ। ज़रा अर्णव को खड़ा करने में मेरी मदद करो।" विरेन ने विराट को बुलाया।

विराट जबरदस्ती गया। दोनों ने मिलकर अर्णव को खड़ा किया और उसे प्राथमिक चिकित्सा के लिए स्कूल के ऑफिस में ले गए।

अर्णव को पैर में गहरा घाव हो गया था। इसलिए चार दिन तक वह स्कूल नहीं आ सका। जिसके कारण उसकी पढ़ाई का बहुत नुकसान हुआ। दूसरे विषयों की उसे इतनी फिक्र नहीं थी, लेकिन गणित की उसे बहुत ही चिंता थी।

एक पिरीयड में उसने समीर से पूछा, "संध्या मिस ने क्लास में जो सवाल कराए थे, वह मुझे समझाएगा?"

"नहीं, अर्णव, अभी मेरे पास टाइम नहीं है और वैसे भी मैं तुझे क्यों समझाऊँ? यहाँ तेरी दादागिरी काम नहीं आएगी।" समीर ने समय देखकर बदला ले लिया। समीर के शब्दों से अर्णव आहत हो गया। वह निराश होकर अपनी बेंच पर जाकर बैठ गया।

वीरेन ने, समीर और अर्णव की बातें सुनी। वह अर्णव के पास गया।

"अब तू यहाँ क्या कर रहा है? मेरी हालत देखकर मेरा मज़ाक उड़ाने आया है?" वीरेन को अपनी बेंच पर देखकर अर्णव चिढ़कर बोला।

नहीं, मैं तेरा मज़ाक उड़ाने नहीं लेकिन तेरी मदद करने आया हूँ। संध्या मिस के दिए गए सवाल में तुझे समझाऊँगा।"

"सचमुच?" अर्णव को आश्चर्य हुआ और फिर आधे घंटे तक वीरेन ने अर्णव को सवाल समझाए।

"थैंन्क यू वीरेन, थैंन्क यू सो मच कि तूने मेरी मदद की" अर्णव ने दिल से वीरेन का आभार माना।

वीरेन अपनी बेंच पर गया, तब विराट ने हँसते-हँसते उसे बधाई दी। वीरेन को आश्चर्य हुआ, "कॉग्रेच्युलेशन? किस लिए?"

"अरे यार, तू क्लास का पहला ऐसा लड़का होगा, जिसे अर्णव ने इतने दिल से "थैंन्क यू" कहा होगा। अर्णव को ऐसे आभार मानना आता है, इसका मुझे पता ही नहीं था।" विराट ने हँसते-हँसते जवाब दिया।

विराट की बात वीरेन को अच्छी नहीं लगी। उसने गहरी साँस ली और फिर अपने बस्ते में कुछ ढूँढने लगा। बस्ते में से उसने एक मैगज़ीन निकाली और उसके पेज पलटने लगा।

"क्या हुआ दोस्त, हम तो गणित कर रहे थे और तू यह मैगज़ीन लेकर..." विराट का वाक्य पूरा हो उससे पहले ही वीरेन बोला, "विराट, यह चित्र देख।"

"यह चित्र किस चीज़ का है?" विराट ने उत्सुकता से पूछा।

"जापानी साइन्टिस्ट मासारुं एमोतोना के एक वैज्ञानिक प्रयोग की है। यह चित्र पानी पर शब्दों का असर दिखाता है। जिस पानी के सेम्पल पर अच्छे शब्द बोले गए, उस पानी में ऐसे सुंदर क्रिस्टल बने और यह अजीब सा चित्र उस पानी के सेम्पल का है, जिस पर खराब शब्द बोले गए।" वीरेन ने कहा।

"सचमुच? पानी पर शब्दों का असर होता है!!" विराट की आँखें फैल गई।

"हाँ, उस सोलोमन आयलेंड की बात सुनी है?"वीरेन ने पूछा

"नहीं,"

"सोलोमन आयलेंड नाम की एक जगह है। ऐसा कहते हैं कि वहाँ के आदिवासियों को कोई विशाल पेड़ काटना हो, जिसे वह अपनी कुल्हाड़ी से नहीं काट सकते हों, तो वे ज़ोर ज़ोर से एक महीने तक उस पेड़ को अपशब्द बोलते हैं और करीब तीस दिन में वह पेड़ अपने आप ही गिर जाता है। अब तू ही बता, यदि पानी और पेड़ पर शब्दों का इतना असर होता है, तो क्या मनुष्य पर नहीं होगा? यदि अच्छे शब्दों से पानी में इतने सुंदर क्रिस्टल बन सकते हैं, तो मीठे शब्दों से अर्णव में परिवर्तन नहीं आ सकता?" वीरेन ने कहा।

विराट को अब मीठे शब्दों का असर समझ में आया। दूसरे दिन क्लास में संध्या मैडम ने गणित का "सरप्राइज टैस्ट" लिया। टैस्ट के बाद अर्णव दौड़कर वीरेन के पास आया।

"वीरेन, यदि तूने कल मेरी मदद नहीं की होती तो आज मैं टैस्ट में फेल हो गया होता। थैंन्क यू यार।"अर्णव गद्‌गद् होकर बोला।

"मुझे खुशी हुई अर्णव कि तुझे आज टैस्ट में वह काम आया।" वीरेन ने जवाब दिया।

"वीरेन मैंने अभी तक सभी को डराकर, धमकाकर और गालियाँ देकर जो चाहता था वह सब छीन लेता था", बोलते-बोलते अर्णव का गला भर आया। "फिर भी तूने हमेशा मेरे साथ प्रेम से ही बातें की। ज़रूरत के समय मेरी मदद भी की। मुझे मेरे बर्ताव के लिए बहुत अफसोस हो रहा है।"

वीरेन ने अर्णव का हाथ पकड़कर कहा, "चल यार, जागे तब से सबेरा, ठीक है न? तुझे तेरी भूल का पछतावा हुआ, यही महत्व का है" और फिर हँसते-हँसते पूछा, "तो इस बार क्रिकेट में विराट को पहले बैटिंग करने देगा न?"

"हाँ, हाँ, प्रोमिस।" कहकर वह वीरेन के गले लग गया।

और तब से विराट और वीरेन की प्रसिद्ध जोड़ी में से विराट, वीरेन और अर्णव की प्रसिद्ध त्रिपुटी बन गई!

अपने आप को परखकर देखो

मेरे पड़ोसी, टिन्कू और टीमी से आस-पास के लोग बहुत ही परेशान हो गए थे। उसका कारण जानते हो? उनकी कड़वी वाणी।

इस अंक से हम समझे हैं कि हमारी वाणी से किसी को दुःख नहीं पहुँचना चाहिए। चलो हम अपनी यह बात उनके साथ शेयर करते हैं। टिन्कू और टीमी के बोले हुए कठोर वाक्य नीचे लिखे हैं। उसके सामने मीठी वाणी लिखो। हर एक वाक्य में एक-दो कर्कश शब्द भी शामिल हैं। उन शब्दों के नीचे लाइन करो।

१. बेअक्ल के! यह चप्पल तो बाहर उतार! मेरी मम्मी ने अभी घर में पोंछा किया है।
मीठा वाक्य :

२. नाथूडा, मेरा बैग दे! ध्यान कहाँ है तेरा? बेहोश है साला!
मीठा वाक्य :

३. सुना तूने? सामने देख और फिर जवाब दे!! नहीं तो आज से मुझे अपना फ्रेन्ड नहीं लेकिन दुश्मन समझना, कह देता हूँ तुझे!
मीठा वाक्य :

४. देखते ही एकदम चिढ़ मचे, ऐसी प्रिन्टवाली ड्रेस कहाँ से ले आई? बदल-बदल जल्दी।
मीठा वाक्य :

५. मम्मी, ये छोटी तो एकदम बेशर्म है। अब मैं इसे कभी भी, कहीं भी नहीं लेकर जाऊँगी। आज तो इसने मेरी नाक ही कटवा दी!
मीठा वाक्य :

६. देख मेरी बार्बी को फिर से गिरा दिया तूने। तेरे हाथ टूट गए हैं क्या! कब सीखेगी?
मीठा वाक्य :

७. अरेरेरे, यह अपशकुनी फिर से आ गया! मेरे बाप, तू जा वापस, हमें तेरी ज़रूरत ही नहीं है, इस टीम में, नहीं तो हम फिर से हार जाएँगे।
मीठा वाक्य :

८. ऐसा बेकार खाना किसने बनाया? चाची ने?
मीठा वाक्य :

मीठी वाणी लिखने के बाद तुम्हें ऐसा नहीं लगता कि किसी को दुःख न हो ऐसा बोलना कितना आसान है?

चलो खेलें...

१

यहाँ कागज के टुकड़े से एक अंग्रेजी अक्षर काटकर बनाया है। उसे एक बार इस तरह से मोड़ो, ताकि वह अक्षर पहचाना जा सकें और हाँ... वह अक्षर L तो हैं ही नहीं... तो चलो ढूँढ निकालते हैं उस अक्षर को।

३

बिंदुओं को जोड़कर चित्र बनाएँ।

२

१६ दियासलाइयाँ लेकर उसे चित्र में बताए अनुसार ५ चौरस में सेट करें। अब आपको कोई भी दो दियालाई को इस तरह से निकालें ताकि ४ चौरस बनें।

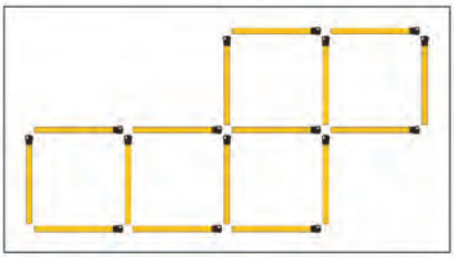

ऐतिहासिक गौरवगाथा

भगवान महावीर ने आत्म साधना करने के लिए राजमहल, सगे-संबंधी सभी का त्याग करके दीक्षा ली। दीक्षा लेकर वे जंगल की तरफ निकल पड़े।

जंगल के मार्ग से आगे बढ़ते हुए, सबसे पहले मोराक गाँव में एक तापस के आश्रम में रहे। आश्रम के कुलपति ने महावीर को रहने के लिए एक घास की झोपड़ी दी। महावीर तो दिन रात आत्म ध्यान में रहते थे। भूखी गायें आकर झोपड़ी का घास चरने लगीं इससे कच्ची झोपड़ी टूटने लगी। आश्रम के कुलपति ने महावीर से झोपड़ी का ध्यान रखने के लिए कहा पर महावीर ने तो आत्मा की प्राप्ति के लिए महल छोड़ा था, तो वह इस घास की झोपड़ी के झंझट में क्यों पड़ते?

किसी भी तरह की कटुता के बिना, सहजभाव से आश्रम के कुलपति को बताकर उन्होंने दूसरे एकांत और शांत स्थल पर पहुँचने के लिए विहार किया। विहार करते समय उन्होंने पाँच नियम स्वीकार किए। १. मुझसे किसी को दुःख हो ऐसी जगह नहीं रहना है। २. जहाँ रहूँ, वहाँ ध्यान में ही रह सकूँ। उसके अनुसार ही जगह पसंद करनी है। ३. अधिकतर मौन ही रहना है। ४. भिक्षा के लिए पात्र नहीं रखना है, हाथ से ही भोजन करना है। ५. किसी की खुशामद नहीं करनी है।

शांत स्थान की खोज में आगे बढ़ते-बढ़ते महावीर मोरक गाँव से निकलकर अस्थिक गाँव में पहुँचे। गाँव के बाहर एक पहाड़ी थी। पहाड़ी पर, शूलपाणि यक्ष का छोटा सा मंदिर था। महावीर को वह स्थान बहुत ही अच्छा लगा। उस स्थान के उपयोग के लिए गाँव के लोगों से अनुमति माँगी, क्योंकि उन्होंने ऐसा तय किया था कि माँगे बिना किसी का कुछ भी नहीं लेना है।

गाँव के लोगों ने महावीर को हकीकत बताते हुए कहा, "दिन में मंदिर का उपयोग करने में कोई दिक्कत नहीं है। लेकिन रात के समय, मंदिर के देव शूलपाणि यक्ष, वहाँ रात में रुकनेवाले को मार देते हैं।"

शूलपाणि यक्ष का जान लेवा होने का कारण महावीर ने गाँववालों से जाना। बात ऐसी थी कि : इस गाँव का पुराना नाम वर्धमान था। पास में वेगती नदी बहती थी। वेगती नदी का किनारा कीचड़-कंकड़ से भरा हुआ था।

एक बार धनदेव नाम का किराने का व्यापारी पाँच-सौ गाड़ियाँ लेकर इस गाँव की तरफ आया। लेकिन इस नदी का कीचड़ पार करना उसे भारी पड़ गया। मज़बूत बैल होते हुए भी गाड़ियाँ कीचड़ में फँस गई थी। लेकिन उन सभी बैलों में एक बैल बहुत ताकतवर था। उसने लाज रख ली। बारी-बारी से दूसरे बैलों के साथ जुड़कर सभी पाँच-सौ गाड़ियों को नदी के पार उतार दिया। लेकिन अंत में लहूलुहान हालत में जमीन पर गिर पड़ा। धनदेव का इस वफादार बैल को इस हालत में छोड़कर जाने का मन नहीं था। लेकिन इतना ज्यादा माल और बरसात का मौसम! लाचारी से उसने गाँव के लोगों को उस बीमार बैल को सौंप दिया और उसके इलाज के लिए बहुत सारा धन देकर चला गया।

गाँव के लोगों ने बैल की बिल्कुल भी देखभाल नहीं की। दवाई, घास और चारे के अभाव से वह बैल तड़प-तड़पकर मर गया और फिर शूलपाणि नाम का व्यंतर देव बना। गाँव के लोगों के प्रति बैर की आग सुलगने लगी। बैर लेने के लिए गाँव के लोगों को वह मारने लगा और देखते ही देखते वहाँ हड्डियों का ढेर लग गया। और इसी कारण गाँव का नाम बदलकर अस्थिकग्राम हो गया(अस्थि मतलब हड्डी)।

शूलपाणि के त्रास से तंग आए हुए गाँव के लोग खूब मिन्नतें मांगने और व्रत करने लगे। तब व्यंतर देव प्रकट हुए। व्यंतर देव की सूचना के अनुसार, गाँव के लोगों ने गाँव के पास एक पहाड़ी पर मंदिर बनाया। उसमें यक्ष देव की स्थापना की और नियमित पूजा करने लगे। उसके परिणाम से यक्ष देव शांत हुए लेकिन उनकी संहार लीला नहीं रुकी। मंदिर में रात को रुकनेवाला परलोकवासी बन जाता था!

महावीर ने पूरी बात जान ली। लेकिन वे तो निर्भय थे। गाँव के लोगों ने महावीर से दूसरी जगह रहने की विनती की। लेकिन महावीर तो महावीर थे। शूरवीर आत्म साधकों को मृत्यु का डर कैसा? उन्होंने गाँववालों से यक्षमंदिर में चातुर्मास करने की अनुमति ले ली। यक्षमंदिर के मार्ग पर बढ़ रहे आत्मसाधक को गाँव के लोग देखते ही रह गए।

रात हुई। शूलपाणि यक्ष ने देखा की, आज किसी काले माथे के आदमी ने यक्षमंदिर में रात को रुकने की हिम्मत की है! यक्ष का क्रोध भड़कने लगा। उसने महावीर को कष्ट देना शुरू किया। पूरा मंदिर भयानक आवाज़ से गूँज उठा। कैसा भयंकर अट्टहास्य! धरती थर्राने लगे, पहाड़ हिलने लगें, पक्षी डर से मरने लगें और अच्छे-अच्छे पराक्रमी की हिम्मत टूट जाए, ऐसा अट्टहास्य! लेकिन महावीर पर तो कोई असर नहीं हुआ। क्रोधी शूलपाणि ने हाथी, पिशाच, नाग के विकराल रूप धारण करके महावीर को पछाड़ने का बहुत प्रयत्न किया लेकिन सभी व्यर्थ! महावीर को न तो कोई भय और न ही कोई चिंता!

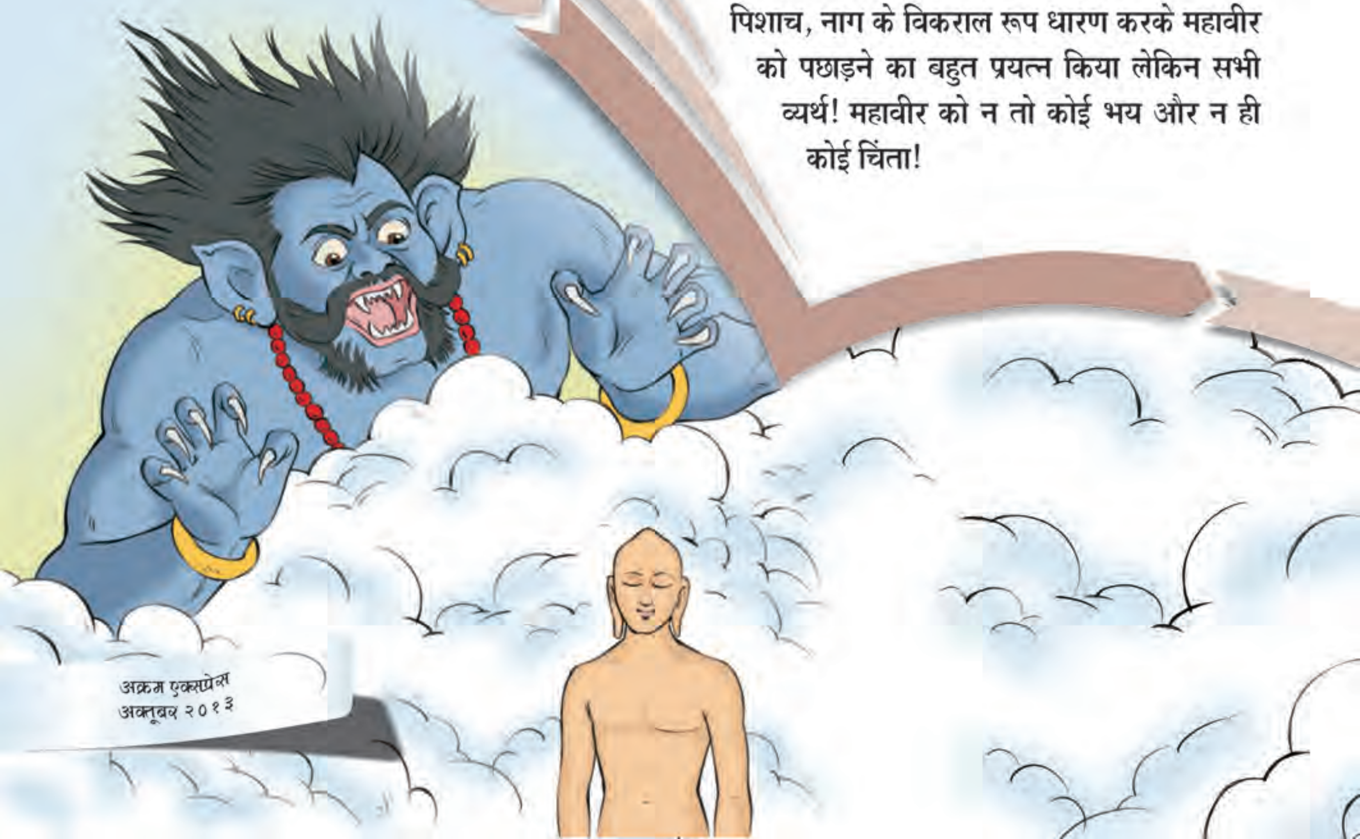

फिर तो शूलपाणि ने महावीर के शरीर को पीड़ा देने में कोई कसर बाकी नहीं रखी। लेकिन जिसे शरीर के प्रति माया ही नहीं थी, उसे शरीर की पीड़ा किस तरह दुःख दे सकती है? जैसे-जैसे शूलपाणि के जुल्म बढ़ते गए। वैसे-वैसे प्रभु का आत्मबल बढ़ता गया। आधी रात तक शूलपाणि का जुल्म चलता रहा। लेकिन अंत में उसकी शक्ति कमज़ोर पड़ने लगी। उसने सोचा, "अनहोनी हो गई, जो आज तक नहीं हुआ वह आज हुआ है। एक सामान्य मानव से मेरे जैसा दिव्य देव लाचार हो गया!"

भगवान तो अभी भी अड़िग खड़े हुए थे। शूलपाणि ने अपनी क्रोध से थकी हुई आँखें, प्रभु की करुणा भरी आँखों से मिलाई और चमत्कार हो गया! शूलपाणि भगवान के चरणों में झुक गया! प्रभु के साथ दृष्टि मिलते ही उनके अंदर भरा हुआ क्रोध, बैर, द्वेष, गर्व और क्रूरता का विष निकल गया।

प्रभु ने, शूलपाणि से उसके पूर्व जन्म की बात कही : "पूर्वजन्म में तू बैल था। तब तूने तेरी काया की परवाह किए बिना पाँच-सौ गाड़ियाँ और करीब हज़ार बैलों को नदी पार करने में मदद की थी। तब तेरा शरीर भले ही पशु का था लेकिन उसमें पशुता के बदले दया का अमृत भरा हुआ था! तेरी इस दया के कारण तुझे देव का अवतार मिला। लेकिन गाँव के लोगों के प्रति जागी बैर की भावना से तेरे अंदर द्वेष, क्रोध, अहंकार उत्पन्न हो गए। तू तेरा दैवीय गुण भूलकर पशुता का पुजारी बन गया! जो निर्दोष मानवों को अपार दुःख दे और बैर की अग्नि में अपना आत्मधन जलाए, वह देव माना जाएगा या पशु? तू पशु था, तब ऐसा सत्कार्य किया था कि देवों की भी शोभा बढ़े और देव का जन्म पाकर ऐसा पापकर्म किया कि पशु को भी शर्म आए! अब तू ही बता देव बड़े या पशु?"

शूलपाणि को अपनी भूल समझ में आई। प्रभु के चरणों की धूल अपने सिर पर लगाकर उसने फिर कभी किसी को दुःख नहीं देने का निश्चय किया। आनंदविभोर होकर वह प्रभु की भक्ति करने लगा। और प्रभु से पूरे साल वहीं रहने की विनती की। शूलपाणि का ऐसा परिवर्तन देखकर प्रभु के मुख पर आनंद छा गया!

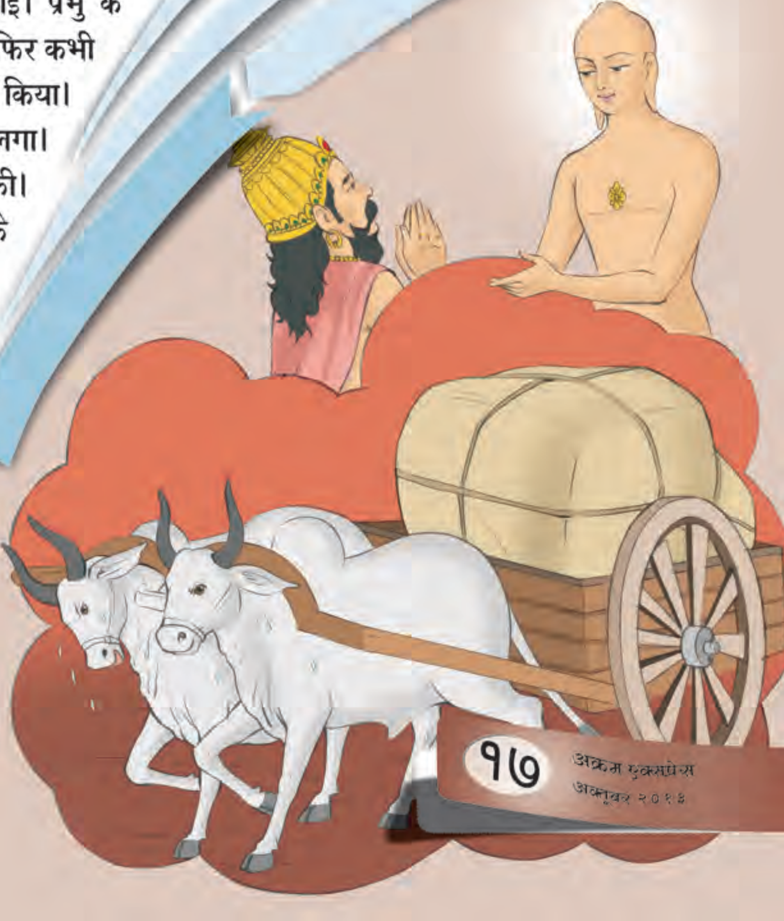

मीठी यादें

एक ब्रह्मचारी बहन की बात है। उन्हें ऐसा बहुत लगता कि मैं आगे पढ़ूँ, पैसा कमाऊँ करियर बनाऊँ लेकिन नीरू माँ से मिलने के बाद ऐसा होने लगा कि मुझे तो अब अडालज जाकर रहना है।

बी.कॉम. पूरा करने के बाद उन्होंने तुरंत नौकरी ढूँढ ली। पहले वेतन का चैक लेकर वह नीरू माँ को, भगवान के लिए देने आई। नीरू माँ पलंग पर सो रहीं थीं। चैक देखकर उन्होंने एक मिनट उन बहन के सामने देखा। फिर उनसे कहा, "तुझे तो आगे पढ़ना था न?"

बहन : हाँ नीरू माँ, पढ़ना था लेकिन अब मुझे कुछ पढ़ना-वढ़ना नहीं है। मुझे तो जल्दी अडालज आ जाना है।

नीरू माँ : लेकिन तुझे क्या पढ़ना था?

बहन : सी.ए. करना था लेकिन अब नहीं करना। वह बहुत हार्ड होता है।

नीरू माँ : तो एम.बी.ए. कर सकती है न।

बहन : हाँ, वह अच्छा है लेकिन बहुत मँहगा पड़ता है नीरू माँ। इतने पैसे मेरे पास नहीं हैं कि मैं कर सकूँ।

नीरू माँ : कोई बात नहीं, अपने को लोन मिलता है न।

बहन : लेकिन मुझे नहीं पढ़ना।

नीरू माँ : नहीं, नहीं। तुझे पढ़ना है और दादा का खूब काम करना है। ऐसा कहकर नीरू माँ ने उनका चैक वापस दे दिया।

वह बहन तो एकदम प्रोत्साहित हो गई। उन्होंने कहा, "ठीक है नीरू माँ, मैं पढ़ूँगी लेकिन यह चैक तो आप रखिए ही।"

नीरू माँ को जब भरोसा हो गया कि अब वह आगे पढ़ाई करेगी उसके बाद ही नीरू माँ ने चैक लिया। वह बहन बहुत खुश हो गई और तब से उनका निश्चय पक्का होने लगा कि मुझे आगे पढ़ना ही है और फिर सचमुच उन्होंने एम.बी.ए. किया।

नीरू माँ एक-एक की निश्चय के साथ व्यवहार की प्रगति का भी उतना ही ध्यान रखतीं थीं। नीरू माँ के लिए पागल बने बच्चे होश भूल जाएँ लेकिन क्या नीरू माँ भूल सकते थे? वे एक-एक को उनकी क्षमता के अनुसार कुशल व्यवहार करवाकर ही रहतीं!

पज़ल के जवाब

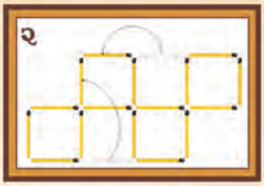

अपने आप को परखकर देखो

(इस एक्टिविटी में सही जवाब मर्यादित नहीं हैं। अनेकों तरह से मीठे वाक्य लिखे जा सकते हैं।)

१. आओ, आओ, दोस्त!... ज़रा, चप्पल बाहर उतारना क्योंकि घर में अभी पौंछा किया है।

२. नाथू, मुझे मेरा बैग नहीं मिल रहा। तूने देखा है? ढूँढने में ज़रा मेरी मदद कर न, प्लीज़। मुझे देर हो रही है।

३. तू तो मेरा फ्रेन्ड है। प्लीज़ मेरे साथ बात कर न! मेरी कोई भूल हो गई हो तो मुझे बता। मैं सुधार लूँगा। प्रोमिस.....

४. इसकी जगह प्लेन ड्रेस तुझ पर ज्यादा अच्छा लगेगा। वह पहनकर देख न!.....

५. मम्मी, बहन को मेरे साथ बाहर न ले जाऊँतो चलेगा? इसे बड़ों के साथ कैसे बात करनी चाहिए यह समझ में नहीं आता!

६. अरे, बार्बी गिर गई? कोई बात नहीं। चल, तेरे टॉयज़ से खेलते हैं। कल मुझसे मेरे भाई का ट्रक टूट गया था!

७. एक काम कर, तू अपने इन्टरनल मैच में खेलना जिससे तेरी अच्छी प्रैक्टिस हो जाएगी। फिर फाइनल में खेलना। ओके?

८. मम्मी, मुझे यह सब्ज़ी खास अच्छी नहीं लगतीं, मैं सिर्फ दाल-चावल खा लूँ?

कवर पेज स्पर्धा

बालमित्रो,

यदि अक्रम एक्सप्रेस का कवर पेज आपकी पसंद का हो तो आपको अच्छा लगेगा न?? तो यह मौका मत चूकना। अक्रम एक्सप्रेस कवर पेज स्पर्धा में हिस्सा लें और आपका कवर पेज आपके अक्रम एक्सप्रेस के मुख्य पेज पर छपा हुआ देखें।

स्पर्धा के नियम

१. इस स्पर्धा में ७ से १४ साल के बच्चे ही हिस्सा ले पाएँगे।

२. आपके कवर पेज का टॉपिक रहेगा "छुट्टियों का मज़ा"

३. A४ साइज़ के पेपर पर बनाना है।

४. कलर में क्रेयान, स्केच, केलिग्राफिक पेन, वॉटर, पोस्टर और फैब्रिक कलर का ही इस्तेमाल करना है।

५. कोई भी डेकोरेटिव मटिरियल्स का ऊपर से इस्तेमाल नहीं करना है।

सबसे अच्छा और योग्य कवर पेज को इनाम दिया जाएगा। इनाम आपके घर पहुँचा दिया जाएगा। आपका कवर पेज हमें १५ नवम्बर २०१३ तक आपके नाम, पता, उम्र और पासपोर्ट साइज़ फोटो के साथ भिजवाना है।

विजेता का नाम दिसम्बर महीने के अंक में घोषित किया जाएगा और उसका कवर पेज मई, २०१४ के अंक में छपवाया जाएगा!

Akram Express
October 2013
Year : 1, Issue : 7
Conti. Issue No.:7

Date of Publication On 8th Of Every Month
Posted at Adalaj Post office
on 8th of every month

BALVIGNAN
Fun 'n' Gnan with Dada

बच्चों और युवाओं के लिए "ज्ञानी की छाया भाग-५" का विमोचन करते पूज्यश्री

अडालज त्रिमंदिर में पूज्यश्री के सानिध्य में जन्माष्टमी महोत्सव

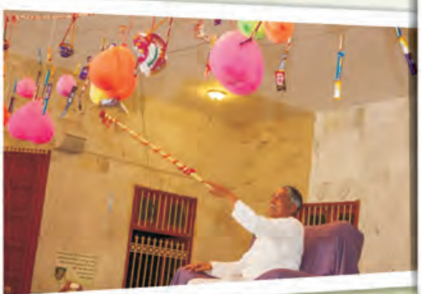

अक्रम एक्सप्रेस के वार्षिक सदस्यों के लिए सूचना

आपकी वार्षिक सदस्यता समाप्त हो रही है उसका पता कैसे चलेगा? यदि आपकी इस महीने में आई हुई अक्रम एक्सप्रेस के कवर के लेबल पर लगे हुए मेम्बरशीप नं. के बाद **#** हो तो यह आपकी अंतिम अक्रम एक्सप्रेस है। उदा. **AGIA4313#** और यदि लेबल पर मेम्बरशीप नं. के बाद **##** हो तो अगले महीने में आपकी सदस्यता समाप्त होगी। उदा. **AGIA4313##** अक्रम एक्सप्रेस रिन्यूअल की जानकारी संपादकीय पेज पर दी गई है।

Printer, Publisher and Owner - Mr. Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation, Editor - Mr. Dimple Mehta, Printing Press **Amba offset:-** Parshwanath Chembers, Usmanpura, Ahmedabad-14 and published at Mahavideh Foundation, Simandhar City, Adalaj-382421.Dist-Gandhinagar.